श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्‌बोधन

पं. दीनदयाल उपाध्याय का सामाजिक व आर्थिक चिन्तन पर तरंग संगोष्ठी

दिनांक 25 सितम्बर, 2020 दोपहर 12:00 बजे

राजभवन, जयपुर

कुलपति प्रो. भागीरथ सिंह जी, प्रो. संजीव कुमार शर्मा जी, कुलपति, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी, बिहार, कुलसचिव श्री अर्जुनलाल गुर्जर जी,डॉ. अनुपमा सक्सैना जी, अन्य सम्मानित अतिथिगण, भाइयो और बहिनो।

राष्ट्र ऋषि पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म आज से 104 वर्ष पूर्व आज ही के दिन हुआ था। पंडित दीनदयाल जी को मैं श्रद्वाजंलि अर्पित करता हूँ। वे बहुआयामी प्रतिभाओं के धनी थे। उनमें शिक्षाविद्, राजनीतिज्ञ, प्रखर वक्ता, लेखक एवं पत्रकार की प्रतिभाएं कूट–कूट कर भरी हुई थीं।

श्रेद्य पंडित जी ने विश्व में प्रचलित अनेक वादों के ऊपर एक नया वाद दिया। उन्होंने सर्वांगपूर्णवाद ''एकात्म मानववाद'' का सिद्वांत प्रतिपादित किया। यह व्यावहारिक और दार्शनिक सिद्वांत है। इसमे हम मानव को सम्पूर्णता और समग्रता में देख सकते हैं।

दीनदयाल उपाध्याय जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक थे। 1950 में जब भारतीय जनसंघ का गठन हुआ तो वे जनसंघ का कार्य देखने लगे। डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था यदि मुझे दीनदयाल उपाध्याय जैसे चार कार्यकर्ता मिल जाये तो मैं देश की राजनीति बदल सकता हूं। उपाध्याय जी जोड़ने की कला में माहिर थे। शायद यही कारण था कि जब जनसंघ की स्थापना के 2 वर्ष के भीतर ही डॉ0 मुखर्जी की श्रीनगर में संदिग्ध हालात में मृत्यु हो गई तो बहुत लोगों को लगता था कि अब जनसंघ चल नहीं पायेगा, तो दीनदयाल जी ने इस आशंका को र्निमूल सिद्ध किया और जनसंघ प्रगति पथ पर बढ़ने लगा। दीनदयाल उपाध्याय राम मनोहर लोहिया के साथ मिलकर देश की राष्ट्रवादी शक्तियों का एक मंच तैयार करना चाहते थे। दीनदयाल जी ने राष्ट्रवादी शक्तियों के लिए जो आधार भूमि तैयार कर दी थी उसी का सुफल था कि बीसवीं शताब्दी के अन्त तक राष्ट्रवादी शक्तियां देश की राजनीति की धुरी में स्थापित हो गई।

दीनदयाल जी की प्रसिद्धि का एक और कारण भी रहा। जब उन्होंने एकात्म मानववाद की अवधारणा दी तो उस पर खूब चर्चा हुई। विश्वविद्यालयों में, बौद्धिक संस्थानों में यह गर्मागर्म बहस का विषय बना। सहमत होना या न होना अलग बात थी लेकिन एकात्म मानववाद की अवेहलना करना बौद्धिक जगत के लिए मुश्किल था। दीनदयाल उपाध्याय ने मानव व्यवहार, व्यक्ति और समाज, मानव विकास के मौलिक प्रश्नों पर चिन्तन करके एकात्म मानववाद की अवधारणा स्थापित की थी। दरअसल मानव को लेकर विश्व भर के चिन्तकों में आदि काल से चिन्तन होता रहा है। सभी चिन्तन मानव के विकास और उसके सुख के लिए समर्पित होने का दावा करते हैं। लेकिन इस दिशा में चिन्तन करने से पहले यह भी जरूरी है कि मानव के मन को समझ लिया जाये। यदि मानव के मन की ठीक समझ आ जाये तभी तो उसके सुख व विकास के लिए रास्ते तय किये जा सकते हैं। यह काम पश्चिम में भी होता रहा है और भारत में भी।

पश्चिम ने मानव मन को समझने का दावा किया। ऐसे चिन्तकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह अकेला नहीं रह सकता उसका सुख दुःख समाज के सुख दुःख से जुड़ा हुआ है। दूसरे चिन्तकों ने इसे अमान्य किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य वास्तव में आर्थिक प्राणी है। उसकी सामाजिकता भी तब तक ही है जब तक इससे उसके आर्थिक हितों की पूर्ति होती है। जीवन यापन के लिए जो बुनियादी जरूरते हैं, उन्हीं की प्राप्ति मनुष्य का लक्ष्य है और इसी से उसे सुख मिलता है। पश्चिम के कुछ चिन्तकों ने इसे भी नकार दिया। उनके अनुसार मानव व्यवहार वस्तुतः काम से संचालित होता है बाकी सब चीजे गौण हैं। पश्चिमी चिन्तकों के ये निष्कर्ष ठीक हो सकते हैं परन्तु सब मिलकर ठीक हैं। एकांगी ठीक नहीं है। परन्तु पश्चिमी चिन्तक इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं। इसलिए उन्होंने मानव शास्त्र के जितने सिद्धांत गढ़े वे सभी किसी एक कारक को प्रमुख मान कर ही गढ़े।

पूंजीवाद और साम्यवाद की अवधारणाएं वस्तुतः भौतिक कारकों को आधार बनाकर गढ़ी गई। इन अवधारणाओं और सिद्वांतों से जिस प्रकार का नुकसान हो सकता था, पश्चिम उसको भोग रहा है।

दीनदयाल उपाध्याय ने एकात्म मानववाद की अवधारणा स्थापित की। यह अवधारणा भारत के युगयुगीन सांस्कृतिक चिन्तन पर आधारित है। उपाध्याय जी मानते थे कि समाजवाद, पूंजीवाद या फिर साम्यवाद, एक शब्द में कहना हो तो अर्थवाद या भौतिकवाद मूलतः भटकाव ज्यादा पैदा करता है और समाधान कम देता है। पूंजीवाद या फिर साम्यवाद के निश्चित खांचों में फिट होने के लिए मानव नहीं है। मूल अवधारणा मानववाद की होनी चाहिए और बाकी सभी वाद या सिद्धांत मानव को केन्द्र में रखकर ही रचे जाने चाहिए। लेकिन पश्चिम में इसके विपरीत हो रहा है। अर्थवाद के प्रणेताओं ने सिद्वांत गढ़ लिये है और अब मानव को विवश कर रहे हैं कि इन काल्पनिक सिद्वांतों के आधार पर स्वयं को ढालें।

मानव वाद या मानव के विकास को खंड खंड करके नहीं देखा जा सकता उसके लिए एकात्म दृष्टि चाहिए। मानव को सभी प्रकार की वस्तुओं की दरकार है। उसे समाज भी चाहिए, बुनियादी जरूरतों की पूर्ति भी चाहिए, काम के क्षेत्र में संगीत साहित्य कला भी चाहिए। परन्तु ध्यान रखना चाहिए कि उसे ये सब एक साथ ही चाहिए। शायद इसलिए दीनदयाल उपाध्याय जी ने मानव के विकास अथवा मानववाद के रास्ते को एकात्म कहा है। एकात्म मानववाद मानव के सम्पूर्ण विकास की बात करता है। दीनदयाल उपाध्याय इसे पुरूषार्थ चतुष्ट्य की पुरातन भारतीय अवधारणा से समझाते थे। भारतीय चिन्तकों ने चार पुरूषार्थो की चर्चा की है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। परन्तु ये चारों पुरूषार्थ अलग अलग नहीं है। परस्पर गुम्फित हैं। अर्थ और काम की साधना तो मनुष्य करेगा ही लेकिन इन दोनों क्षेत्रों में कर्म करने के लिए धर्म की सीमा रेखा निश्चित है। एक बात और ध्यान में रखनी होगी कि सभी प्रकार के पुरूषार्थों की साधना करते हुए मानव जीवन का कोई न कोई लक्ष्य भी होना चाहिए। भारतीय चिन्तकों ने इसी लक्ष्य को मोक्ष कहा है।

एकात्म की अवधारणा को समझाने के लिए दीनदयाल जी संबधों का एक और उदाहरण दिया करते थे। एक ही व्यक्ति एक साथ कई सम्बन्धों को निभाता है। वह एक साथ ही पिता है, भाई है, बेटा है। ये सभी संबध एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। यही मानव प्रकृति की एकात्मकता है। मनुष्य शिशु होता है फिर जवान होता है और अंत में बूढ़ा होता है लेकिन मनुष्य की ये तीनों अवस्थाएं एक सम्पूर्ण इकाई बनती हैं। पश्चिम ने शायद मानव की इस सम्पूर्णता को अनदेखा किया और उसे खंडित नजरिये से देख कर विकास के मॉडल तैयार किये। दीनदयाल उपाध्याय ने इन्हीं मॉडलों के विकल्प में मानव विकास का भारतीय मॉडल दिया जिसे बौद्धिक समाज में एकात्म मानववाद के नाम से जाना जा रहा है।

एकात्म मानववाद की अवधारणा में दीनदयाल उपाध्याय ने आज के एकांगी विकास मॉडलों की दुःखती रग पर हाथ रखा है। मनुष्य जो भी क्रियाएं करता है और जिस प्रकार के भी विकास मॉडलों को लागू करता है उन सभी का अन्तिम उद्देश्य तो सुख या संतुष्टि प्राप्त करना ही है।

अर्थवादी यह समझते हैं कि ज्यादा भोग से ही ही सुख मिलता है परन्तु दीनदयाल जी ने उदाहरण देकर कहा कि सुख मन की स्थिति पर निर्भर करता है। इसलिए विकास की समग्र अवधारणा का समर्थन किया जिसमें मन बुद्वि और शरीर तीनों के विकास का समन्वय हो।

आज जब भोगवादी विकास के सिद्वांतों से दुनियां भर में सुख क्षीण हो रहा है, संसाधनों के अनुचित प्रयोग से मानव के अस्तित्व पर ही संकट आ गया है तब दीनदयाल उपाध्याय की एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है।

महान विचारक एवं युगपुरूष पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने अपनी जिदंगी लोगों की सेवा में समर्पित कर दी। पंडित जी के आदर्शों को आत्मसात कर समाज सेवा में सक्रिय भागीदारी निभा कर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्वांजलि दे सकते हैं। पंडित जी का सादगी से भरा भारतीय मूल्य आधारित जीवन शैली हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है।

उनका राष्ट्रहित और व्यक्ति निर्माण पर गहन सामाजिक चिंतन था। पंडित जी का मानना था कि मानव का सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन होता है। भारतीय दृष्टि के अनुसार मावन शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा चारों का समुच्चय है। इन चारों की अपनी–अपनी आवश्यकताएं हैं। जिनकी पूर्ति के लिए व्यक्ति को पुरूषार्थ करना पड़ता है। समाज से सहज प्राप्ति की व्यवस्था सुनिश्चित करनी होती है, यही एकात्म मानववाद है।

हर पेट को रोटी मिले, हर हाथ को काम मिले और हर खेत को पानी मिलना चाहिए। ऐसी प्राथमिकताएं ही समाज को आगे बढाती हैं और लोगों के बीच सुख और शांति की स्थापना होती है।

पंडित दीनदयाल जी प्रगतिशील विचारक थे। वे सदैव जमीन से जुड़े रहे। मैं उन्हें नमन करता हूँ। राजस्थान पंडित जी से जुड़ा रहा है। युग पुरूष पंडित दीनदयाल जी का बचपन राजस्थान में गुजरा। राजस्थान की ऐतिहासिक धरा को भी मैं नमन करता हूँ।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय ने आज इस पावन दिवस पर मुझे याद किया। इसके लिए आप सभी का आभार व्यक्त करता हूँ। आप सभी का धन्यवाद। जय हिन्द।